



# दवा देने के लिए टेटू

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

विभिन्न रक्त समूहों के लोगों को अलग-अलग पहचानने के लिए भी टेटू का इस्तेमाल करते थे। मिस्र के लक्ज़र में ममियों में राजा और रानी के शरीर पर टेटू मिले हैं जो दर्शाता है कि यह परंपरा काफी पुरानी है।

गोदने की सदियों पुरानी प्रथा आज फिर से लौट आई है एक फैशन के रूप में। फिल्मों में अभिनेता और खिलाड़ी केवल अपने डोले-शोले (मांसपेशियों) ही नहीं दिखाते बल्कि टेटू भी दिखाते हैं। टेटू गोदने के लिए आजकल लेज़र नशतर का इस्तेमाल किया जाता है।

टेटू को तीन प्रमुख मकसदों के लिए इस्तेमाल किया जाता है : सौंदर्य, पहचान चिन्ह और चिकित्सा। उपरोक्त फ्रेंच वैज्ञानिकों द्वारा किया गया काम कोई नया विचार नहीं है लेकिन चूहों में सूक्ष्मजीव संक्रमण के इलाज में इसका उपयोग ज़रूर नया है। जिस दवा का इस्तेमाल किया गया है उसे ओलिलफॉस्फोकोलीन कहते हैं, जो त्वचा को पार करके उस हिस्से में नहीं पहुंच पाती है जहां सूक्ष्मजीव का संक्रमण हुआ है। इसलिए दवा को पहुंचाने के लिए दवाबुझी टेटू सुई का इस्तेमाल किया गया है। इससे लगभग 9 साल पहले हॉलैंड के एक समूह ने इसी तरीके से एक जंतु की त्वचा के नीचे डीएनए अणु को भेजने में सफलता प्राप्त की थी। ऐसा उन्होंने टीकाकरण के मकसद से किया था। इन दोनों ही उदाहरणों में गोदने की परंपरा का उपयोग चिकित्सा विधि के रूप दिखाई देता है।

23 साल पहले की एक घटना याद कीजिए जब इटैलियन ऑलम्पस में ओटज़ी नामक बर्फीला मानव खोजा गया था। इस व्यक्ति के कपड़ों, हथियारों और उसके शरीर का विस्तृत अध्ययन करने पर पता चला था कि कैसे प्रागैतिहासिक काल (3000-3500 ई.पू.) का यह व्यक्ति ऑलम्पस पर्वत को पार करते समय अत्यधिक ठंड में अपनी जान गंवा बैठा था। *नेशनल जियोग्राफिक* पत्रिका के नवम्बर 2011 के अंक में ओटज़ी पर व्यापक कवरेज प्रकाशित किया गया था। आज के संदर्भ में महत्वपूर्ण बात यह है कि उस व्यक्ति

**साइंटिफिक रिपोर्ट्स** के हाल के अंक में फ्रांस के एक समूह ने एक पर्चा प्रकाशित किया है जिसमें उन्होंने सफलतापूर्वक चूहों की त्वचा में गोदने के ज़रिए दवा को पहुंचाया है। यह चूहा *लेशमानिया* नामक सूक्ष्मजीव से संक्रमित था। *लेशमानिया* त्वचा के नीचे स्थित कोशिकाओं पर हमला करता है। ऐसी स्थिति में परंपरागत तरीके जैसे त्वचा पर मलहम लगाना या दवा खाना काम नहीं आते। इसलिए दवा को गोदना गोदकर देने पर विचार किया गया। इस तरीके को पढ़कर एक फ्रेंच कहावत याद आई, “जितना ज़्यादा बदलो, उतना ज़्यादा वही रहता है।”

टेटू या *टाटाऊ* मूल रूप से पॉलीनेशियन शब्द है। सदियों से कई सभ्यताओं में इसका रिवाज़ रहा है। विकिपीडिया में ज़िक्र है कि 1770 के दशक में समुद्री यात्रा के दौरान कैप्टन कुक के साथ गए एक प्रकृति विज्ञानी ने इसका ज़िक्र किया था और पाश्चात्य प्रभाव के चलते इसे टेटू लिखा था। चीनी लोग, मिस्री लोग और हम भारतीयों में भी गोदना गुदवाने की परंपरा रही है। शोलावंदन में जब मैं एक बच्चा था तो मुझे याद है कि जानकार लोग आया करते थे और गोदना गोदते थे। विकिपीडिया के मुताबिक भारतीय मानव विज्ञानी डॉ. एस.के. बरुआ ने इस पर विस्तृत शोध किया है। उन्होंने पूर्वोत्तर भारत, विशेषकर अरुणाचल प्रदेश के *आपातानी* कबीले में गोदने के सामाजिक पहलुओं का वर्णन किया है।

गोदना कई प्रायोजनों के लिए इस्तेमाल किया जाता है - जीवन में बदलाव को दर्शाने हेतु, प्रौढ़ावस्था में कदम रखने के निशान के रूप में, सौंदर्य वृद्धि के लिए या किसी लड़की की सुंदरता पर धब्बा लगाने के लिए, कबीलों और उप-कबीलों की पहचान के लिए। दरअसल हिटलर के जर्मनी में नाज़ी लोग यहूदियों की पहचान के लिए और

के शरीर पर 57 से ज़्यादा टेटू रेखाएं प्राप्त हुई थी। शरीर पर इन टेटू रेखाओं के स्थान व पैटर्न का विश्लेषण करने पर पाया गया कि ये टेटू ज़्यादातर शरीर के उन हिस्सों पर थे जहां गठिया होने की संभावना रहती है। इससे लगता है कि टेटू के ज़रिए ओटज़ी मानव का इलाज करने की कोशिश हुई थी। अलबत्ता, यह साफ नहीं है कि क्या कोई दवा या इसी के समान कोई दूसरा पदार्थ टेटू सुई के ज़रिए शरीर में पहुंचाया गया था।

चीनी लोग ज़रूर प्राचीन काल से एक्यूपंचर के ज़रिए चिकित्सा कार्य करते थे। वे शरीर की कई विशिष्ट जगहों

को पहचान कर सुई के ज़रिए चिकित्सा करते थे। इस बात के कुछ साक्ष्य मिले हैं कि इस तरह से उत्तेजित किए जाने पर ये स्थान कुछ तंत्रिका रसायनों का स्राव करते हैं जिनका असर पूरे शरीर पर होता है। प्राचीन काल में भारत में भी इसी तरह की चिकित्सा की जाती थी। चरक संहिता में सुई चुभोने और दागने की प्रक्रिया के बारे में बताया है मगर यह नहीं कहा जा सकता कि वह टेटू विधि है या नहीं। फ्रेंच और डच वैज्ञानिकों ने ठोस नहीं बल्कि खोखली सुई का इस्तेमाल दवा पहुंचाने के लिए किया है। मगर यह कारगर है, खोखला दावा भर नहीं। (**स्रोत फीचर्स**)